॥ श्री कृष्ण जी की आरती ॥

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ।
गले में बैजन्तीमाला, बजावैं मुरलि मधुर बाला ॥

श्रवण में कुंडल झलकाता, नंद के आनंद नन्दलाला ।
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गगन सम अंगकान्ति काली, राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक कस्तूरी तिलक ॥

चंद्र-सी झलक, ललित छबि श्यामा प्यारी की ।
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसैं, देवता दरसन को तरसैं ।
गगन से सुमन राशि बरसैं, बजै मुरचंग मधुर मृदंग ॥

ग्वालिनी संग-अतुल, रति गोपकुमारी की ।
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

जहां से प्रगट भई गंगा, सकल मल हारिणी श्री गंगा ।
स्मरण ते होत मोहभंगा बसी शिव शीश जटा के बीच ॥

हरै अघ-कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृदांवन वेनू।
चहुं दिशि गोपी ग्वालधेनु, हंसत मृदुमन्द चांदनी चंद ॥

कटत भवफन्द, टेर सुनु दीन दुखारी की ।
आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

paramsoul.com